बुद्ध ज्ञान गीतांजलि

॥ गीत माला ॥

प्रथम खण्ड

रचयिता : रामचरन 'अनुरागी'

बुद्ध ज्ञान गीतांजलि

॥ गीत माला ॥

प्रथम खण्ड

तथागत गौतम बुद्ध

रचयिता

रामचरन 'अनुरागी'

मो.: 9648396734, 9452911084

सम्यक प्रकाशन

प्रथम संस्करण : 2024 (बुद्धाब्द 2569)

ISBN : 978-93-6603-674-8

प्रकाशक : **सम्यक प्रकाशन**
32/3, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली—110063
दूरभाष : 9810249452, 9818390161
Email : hellosamyak1965@gmail.com
Web : www.samyakprakashan.in

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकार्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व लेखक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य : ₹ 50/-

रचना : **बुद्ध ज्ञान गीतांजलि**
रचयिता : रामचरन 'अनुरागी'
सौजन्य से : माता सावित्री फाउण्डेशन, गोरखपुर
कम्पोजिंग : पूर्णिमा स्टूडियो एंड कम्प्यूटर्स
विद्यानगर मोतीगंज, गोण्डा
मो. : 9889332556, 9454077300
आवरण सज्जा : संदीप सुल्तानपुरी

मुद्रक : बालाजी ऑफसेट प्रिंटर्स, नई दिल्ली

साध्वी संवारी देवी

को सादर समर्पित

आपके चरणों में हम
शत्-शत् शीश झुकाते हैं।
आपकी प्रेरणा से अपनी
कलम चलाते हैं।

मंगल कामना

भारत की धरती पर अनेक ऋषियों, मुनियों, सन्तों, विचारकों तथा महापुरुषों ने जन्म लिया है। जिन्होंने समय-समय पर मानव कल्याण तथा समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का कार्य करके मानव ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीव के कल्याण के लिए कार्य किया है। इसी कड़ी में मिशन गायक मा. रामचरन 'अनुरागी' जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण में अर्पित किया है तथा अपने विचारों को अपनी गीत के माध्यम से समाज को नई दिशा देने का महान कार्य किया है। इसलिए सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन, समाज में फैली हुई कुरीतियों तथा अंधकार को दूर करने में मा. रामचरन 'अनुरागी' द्वारा लिखित पुस्तक 'बुद्ध ज्ञान गीतांजलि' गीत माला एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमें लेखक द्वारा अज्ञानता को दूरकर वैज्ञानिक विचारधारा को प्रचार-प्रसार करने का सफल प्रयास किया गया है।

इसका वाचन सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए आधार का कार्य करेगा। विशेष रूप से महिलाओं और गायकों के लिए यह पुस्तक एक मील का पत्थर साबित होगी।

"मैं लेखक को धन्यवाद देते हुए उनके दीर्घायु की कामना करता हूं।"

"भवतु सब्बमंगलं"

राम कुमार राव

प्रबन्धक

पंचशील बुद्ध धम्म

प्रचार समिति, गोण्डा

अभिमत

अदम्य साहस, उत्कट जिजीविषा और प्रखर मेधा के धनी श्री रामचरन अनुरागी जनपद गोण्डा में अपने लोकगीतों के लिए घर-घर जाने जाते हैं। बौद्धिक सोच तर्कशक्ति और खोजी विद्वता के चलते अनुरागी जी लोक प्रचारित भगवान राम के चरण को छोड़कर बुद्धचरण में कब आ गए, जब तक यह जानकारी होती तब तक मान्यवर कांशीराम का प्रकाश उन तक पहुंच चुका था। फिर क्या था अनुरागी जी पूरे तन-मन और धन से लग गए भगवान बुद्ध, बाबासाहेब और सदियों से पीड़ित मानवता की सेवा में। आज 77 वर्ष की अवस्था में रात भर जाग कर भगवान बुद्ध, बाबासाहेब, शाहूजी महाराज और माता सावित्री के गीत इतने मधुर कंठ से गाते हैं कि दूर-दूर से लोग आते हैं और रुके रहते हैं मात्र उन्हें सुनने के लिए। इतनी उम्र में दलित, शोषित और पीड़ित समाज के लिए मन में इतनी पीड़ा कि रुका नहीं जाता वह भी बिना किसी साधन के। बहुत ही कमजोर सामाजिक प्रस्थिति और बढ़ती उम्र के बावजूद मन में इतना जोश कि युवा भी शर्म खा जाए, बहुत ही प्रशंसनीय है। ऐसे युगपुरुष विरले ही होते हैं जो समाज के कमजोर वर्गों के लिए इतनी मनोयोग से कार्य करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तिका में अनुरागी जी के गीतों में समाज के सबसे कमजोर तबके का दर्द, पीड़ा और आक्रोश दिखता है जिसे धर्म के नाम पर थोप दिया गया है कानून बनाकर। गीतों का यह संकलन इसी का निचोड़ है। निश्चित रूप से यह निष्कर्ष, यह निचोड़ जनमानस के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

डॉ. डी.के. वर्मा

अंबेडकर नगर

विषय सूची

मंगल कामना 4

अभिमत 5

क्र.म.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	सोहर : छत्रपति शाहूजी महाराज	8
2.	भजन : भजो मन भीम नाम सुखदायी	10
3.	मंगल गीत : डॉ. अंबेडकर जयंती	11
4.	ग़ज़ल : भटके हुए मुसाफिर	12
5.	भजन : सोवत बहुत दिन बीता	13
6.	गारी : डॉ. अंबेडकर, महात्मा गांधी संवाद	15
7.	ग़ज़ल : भीम बाबा ने हमको पुकारा	16
8.	गारी : सूदन का सबरन देखे जरैं	18
9.	गारी : सुनौ दलित भइया....	20
10.	गारी : पढ़ि लिखि लिहयौ	21
11.	गारी : अंधविश्वास दूरि भगाओ	22
12.	उलारा : खत आय गवा...	23
13.	कहरवा : इटिंग मीटिंग के बहनवा	24
14.	कहरवा : हमका लूटि खाएव	25
15.	कहरवा : जब तक पूजिहो...	26
16.	कहरवा : लहरी पंचशील के झण्डा	27

17. कहरवा (नशा निषेध) : नशवा मटिया माँ मिलइहैं 28

18. कहरवा : भलि कै लूटेव तू विदेशी 29

19. भजन : मानो पिया देशवा गरद होइ जाई 30

20. सोहर : माता सावित्री 32

21. बिरहा : हमें धोखवा से निर्धन बनाय दिहले 33

22. देशभक्त बाबासाहेब : बाबा साहब को चैन न आवे........................ 34

23. चेतावनी बिरहा : काहे जय भीम कहते सरम लागे 35

24. सोहर : तथागत बुद्ध जयंती (1) 36

25. सोहर : तथागत बुद्ध जयंती (2) 37

26. गारी : हाँ बाबा भीम से बने 38

27. भजन-ज्ञान प्राप्ति : पिपर तरै 39

28. गीत : भला बुरा कौन सा दिन? 40

29. ढोंग पाखण्ड : हमें दुविधा की रहिया देखावेला 42

30. ग़ज़ल : बहुजनों के खातिर जिसने सही मुसीबत भारी है.................. 44

31. गीत : पाखण्ड दलित अछूत कैसे?... 46

32. कहरवा : हम सपनवा देखा नाय 47

33. सास/पतोह : एक तौ हमहीं रहेन बौरहिया 48

34. भजन चेतावनी : पंडित सबका हिंदू माने ला................................ 49

35. ग़ज़ल : देश के नौजवानों उठो शान से....................................... 50

36. बिरहा : दाढ़ी मोंछ छिलाय के नाय 51

37. सोहर : महामना सन्त गाडगे जयन्ती 52

38. सोहर : संत शिरोमणि रविदास साहब जयन्ती 53

39. सोहर : महामना जोतिबा राव फुले जयन्ती 54

40. सोहर : सरदार पटेल 55

धम्म प्रेमियों का सहयोग 56

1. सोहर

छत्रपति शाहूजी महाराज

कहंवा जन्मे बुद्ध गौतम?
कहंवा बाबा भीम? कहंवा बाबा भीम हो?
सखियाँ कहंवा जन्मे छत्रपति शाहूजी?
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

लुंबिनी बन जन्मे बुद्ध गौतम,
इंदौर बाबा भीम, इंदौर बाबा भीम हो।
सखियाँ कोल्हापुर में जन्मे छत्रपति शाहूजी,
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

केकरे कोखियाँ जन्मे बुद्ध गौतम?
केकरे बावा भीम? केकरे बाबा भीम हो?
सखियाँ केकरे कोखियाँ जन्मे छत्रपति शाहूजी?
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

महामाया कोखियाँ बुद्ध गौतम,
भीमा माता कोखियाँ बाबा भीम,
भीमा के बाबा भीम हो।
सखियाँ राधावाई कोखियाँ जन्मे शाहूजी,
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

काव किहिन बुद्ध गौतम?
काव बाबा भीम? काव बावा भीम हो?
सखियाँ काव किहिन छत्रपति शाहूजी?
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

ज्ञान दिहिन बुद्ध गौतम! संविधान बाबा भीम!
संविधान बाबा भीम हो।
सखियाँ आरक्षण दिहिन छत्रपति शाहूजी!
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

अनुरागी मंगल गावैं बहुजन का सुनावैं,
सुनाइया फल पावें, सुनाइया फल पावें हो।
सखियाँ जे यह मंगल गावैं,
ते गाय के सुनावैं, ते गाय के सुनावैं हो।।

"अत्त दीपो भव"

2. भजन

भजो मन भीम नाम सुखदायी

1. राम-राम रटते युग वीते नीची जाति कहाई।
दूरि दूरि दुरियाये जाते तवहूं सरम न आई।।
भजो मन भीम नाम सुखदाई।।

2. भरूही के वच्चे वचि जावे, घंटा दियो गिराई।
हमरे सुत भूखन मरि जावे, काहू न दीन्हेव जेवाई।।
भजो मन भीम नाम सुखदाई।।

3. दुरपद सुता के चीर वढ़ाकर माया अगम दिखाई।
वहू वेटिन की लाज लुटत है सोये कहाँ कृष्ण कँधाई।।
भजो मन भीम मन सुखदाई।।

4. अंधी खोपड़ी के हम मनई जिनका शीश झुकाई।
वही द्विजाति उल्टे हमको देत है दूर-दूर दूरियाई।।
भजो मन भीम नाम सुखदाई।।

5. संकट पड़े कठिन जव इन पर तव हमहीं काये आई।
तड़पि-तड़पि हम प्राण गँवावे, तव इनको दया नहिं आई।
भजो मन भीम नाम सुखदाई।।

6. कथा सुनत मोर दादा मरिगे, दान करत मोर माई।
सुनत भागवत पिताजी मरिगे, हम केहका गोहराई।।
भजो मन भीम नाम सुखदाई।।

7. 'अनुरागी' जव भीम जपे तव सुख की झलक दिखाई।
स्वर्ग लोक की राह खुली है, वौद्ध धम्म अपनाई।।
भजो मन भीम नाम सुखदाई।।

3. मंगल गीत

डॉ. अंबेडकर जयंती

तर्ज : जौं मैं जनतिंव भवानी माता यहि राहें अइबौ हो....माता।

14 अप्रैल के दिनवॉ 1891-2 हो,
ललना रामा राव जी के मड़इया
भीम बाबा जन्मे हो ।। टेक।। 14 अप्रैल।।

भीमा माताजी के उदर से भीम बाबा जन्में-2 हो।
ललना भीमा माता खुशियाँ मनावें तौ चलीं है
महलियान हो।। 14 अप्रैल।।

रामजी राव खुशियाँ मनावें गोतिनी बुलावें-2 हो।
ललना रामा राव मंगल गँवावें तौ मुहर लुटावें-2 हो।। 14 अप्रैल।।

घेरे है काली बदरिया गरज घन घोर-2 हो।
ललना जुटी है महू की सब बाला तौ मंगल गावें-2 हो।।
14 अप्रैल।।

'अनुरागी' मंगल गावेंसब जन का सुनावें-2 हो।
ललना 14 अप्रैल सुंहावन सुनइया फल पावें-2 हो।। 14 अप्रैल।।

4. ग़ज़ल

भटके हुए मुसाफिर

तर्ज : गुजरा हुआ जमाना आता नहीं दुबारा.... तुम्हारा।

भटके हुए मुसाफिर सुन लो मेरा इशारा,
तुम जा रहे किधर हो,
किसका लिए सहारा, गुम होश क्या तुम्हारा।। टेक।।

कुछ छण के झूठे सुख में, फँसकर भटक गये हो।
भटके किधर हो जाते, गुम होश क्या तुम्हारा।। भटके।।

तुमको हैं जितनी चाहें, उनसे अधिक हैं राहें।
चौराहे हर डगर पे भूलोगे तुम दिशायें,
होगा कठिन समझना है, कौन पथ तुम्हारा।। भटके।।

अब बुद्ध की शरण में आओ, तुम दूर कहीं न जाओ।
इज्जत यहीं मिलेगी, अब ठोकर कहीं न खाओ।
'अनुरागी' सुख यहीं पर, दुःख दूर होगा सारा।। भटके।।

भटके हुए मुसाफिर सुन लो मेरा इशारा,
तुम जा रहे किधर हो,
किसका लिए सहारा, गुम होश क्या तुम्हारा।। टेक।।

5. भजन

सोवत बहुत दिन बीता

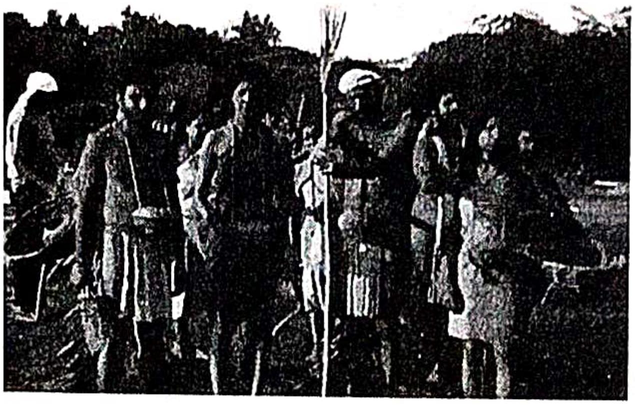

सोवत बहुत दिन बीता हो जागो मोरे मीता।। टेक।।
वर्ष हजारों धोखे में बीत गये-2 सबरन तुमको पीटा हो।। जागो।।

तुमसे कहिन हम भाई-2 हैं,
कमवा दिहिन तुम्हका नीचा हो।। जागो।।

कुर्मी, कहाँर, कलवार, अहिर, भर-2,
मतलब के बाद तुम्हू नीचा हो।। जागो।।

तेली तेल देवें, मेढ़ बाँधे लोनिया-2,
भूजा भूजैं भुजवा लोहार लोहा पीटा हो।। जागो।।

नाई बाल काटैं, सबजी मुराव लावें-2,
खालि लावें रुपया बरवार जाये पीटा हों।। जागो।।

ढाढ़ी, खटिक सुअर पालैं सेंध काटैं पसिया-2,
जूता बनावे जाति चमकटिया हो।। जागो।।

शूद्र गँवार ढोल पशु नारी-2 ये सब ताड़न के अधिकारी।
पदवी दिहिन तुम्हका नीचा हो। ।। जागो।।

कहैं 'अनुरागी' बौद्ध धम्म अपनाओ-2,
अब न बनौ ऊँचा नीचा हो। ।। जागो ।।

"अत्त दीपो भव"

6. गारी

डॉ. अंबेडकर, महात्मा गांधी संवाद

तर्ज : पिया हेरन का रन वन निकलिंव हो,
नाहीं मिला रूपरेख, रसना भीम भजो।।

1947 में देशवा आजाद भइले-2,
अलग भइले भारत पाकिस्तानी रसना भीम भजो।।टेक।।

गाँधी भारत वर्ष लिहले, जिन्ना पाकिस्तनवां हो-2,
तबले अंवेडकर हठ ठानी।। टेक।।

यही बहुजन होवैं देशवा के मालिक हो-2,
अव इनहूँ के हक्क गवामारी।। रसना भीम भजो।।

इतना सुनत गाँधी छुई मुई गइले हो-2
कहा चलो चली शादियाँ रचाई ।। रसना भीम भजो।।

फिसिया तो माफ कइले वर दीक्षा में हो-2,
वजीफा दिहले तिलक चढ़ाई।। रसना भीम भजो।।

सगरौ वराती जव जेंवन वैइठे हो-2,
तवले अंवेडकर रिसियाई।। रसना भीम भजो।।

गांधी ज़वाहर नेहरू चले हैं मनावे हो-2,
तव रिजर्वशन दिहले खिचड़ी खवाई।। रसना भीम बजो।।

पांच जने मिल हेंगा हिलावें हो-2,
तब आरक्षण दिहले माड़ौ हिलवाई।। रसना भीम भजो।।

शादियाँ कराइ गाँधी नरक सिधार गइले-2,
'अनुरागी' अब तक मिली न विदाई।। रसना भीम भजो।।

7. ग़ज़ल

भीम बाबा ने हमको पुकारा

भीम बाबा ने हमको पुकारा,
हम लगायेंगे मिल करके नारा।।
देश पहले रहा है हमारा,
आज भी होकर के रहेगा हमारा।। टेक।।

1. ऊँचे महलों को हम हैं बनाते,
लेकिन न रहने न उसमें हैं पाते।
झोपड़ी में ही न हो गुजारा।।
हम लगायेंगे मिलके नारा।।

2. धरती माता से सब कुछ उगाते,
खाना भरपेट हम सब न पाते।
सूखी रोटी मिले न दुबारा।।
हम लगायेंगे मिल करके नारा।।

3. चरखा करघा हमीं सब चलाते,
पावरलूमों से कपड़ा हम बनाते।
फटहे चिथड़ों से तन को सँवारा।।
हम लगायेंगे मिल करके नारा।।

4. बाबू भइया हैं हम तुमको कहते,
आप हमसे जलन क्यों हो रखते।
प्यार मिलता नहीं क्यों तुम्हारा।।
हम लगायेंगे मिल करके नारा।।

5. थक गये दुःख को हम सहते-2,
रोको 'अनुरागी' आँसू हैं बहते बौद्ध
धम्म मिला हमको सहारा।।
हम लगायेंगे मिल करके नारा।।

6. भीम बाबा ने हमको पुकारा,
हम लगायेंगे मिल करके नारा।।

"अत्त दीपो भव"

8. गारी

सूदन का सबरन देखे जरैं

तर्ज : गंगा जी तेरो भला करैं...., सूदन का सबरन देखे जरैं।। टेक।।

1. खोपड़ी से पैदा मनु वाभन बतावैं, ठाकुर जनमवाँ भुजा से कहावै।
 पेटे से पैदा बनियन का बतावै, सूदै जनम पैरों से बतावैं।
 यदि पैरन के पाँव लागी करावें।।
 सूदन का।। टेक।।

2. पैदा भये तब चमाइन आवें, नार काटि पिछवारे बहावें।
 गुदा और मुँहमॉ अंगुरी नावे, पानी औ साबुन से खूव नहवावें।।
 मलिकन का दूनौ जून लतियावें, धोइ पोंछ तब साफ करें।।
 सूदन का।।

3. ये सुदवन कै कमाई खावें, इन्हीं से सारा काम करवावें।
 इन्हीं से आपन खेत जुतवावें, न पहुँचे तो गारी सुनावैं।
 सूदै बेचारे बोल न पावें, बोले पर इनका बेइज्जत करें।।
 सूदन का।।

4. करधा चलाय कपड़ा बनवाइन, चमड़ा कटाय जूना बनवाइन।
 भंगी बनाय मैला फेंकवाइन, नाई बनाय के बाल कटवाइन।
 धोबी बनाय कपड़ा धुलवाइन, तब छाँटि उठइया साफ करैं।।
 सूदन का।।

5. यादव का पंडित जी फर्च बताइन, गोरस के ताँई वे बुद्धि लगाइन।
 इनकै छुआ बनावा कबहुं न खाइन, यादव बेचारे समझि न पाइन।
 यादव का इंगल पिंगल पढ़ाइन, इन्हें सूदे जानि ब जैरम्मी करैं।।
 सूदन का।।

6. अपना का वे तो पुजारी कहावैं, घर-घर जाय के अलख जगावें।
बनियन से आपन लाभ उठावें, क्षत्री कावे तौ रण मा जुझावें।।
भये विवाहे कैसाइत बतावें, सूद्र राजन के राज्य मा मंत्री बनें।।
सूदन का।।

7. कुर्मी और धुर्मी कै पइया, मारे से डंडा ये देहैं रुपइया।
कुर्मी से आलू घुइया छिलावें, कुर्मी बेचारे समझ न पावें।।
कुर्मी का बड़का किसान बतावैं, इनसे गइया भैंइसिया दान करावें।।
इन्हें भागवत सुनाय के उद्धार करैं।। सूदन का।।

8. कूकूर सबेरे उठि मैला मकौरे, सड़ा घुला वह हाँड़ चिचौरे।
वका दूध भात थाली में खवावे, दूनौं जून देवखरा कड़ावें।।
वहि कुकरै का गददा पर सोवावे, मनई के लड़कन का दूरि भगावें।
वह चाटि चूटि तब साफ करैं।। सूदन का।।

9. 'अनुरागी' पहिचान बतावै, भारत वासिन कै गुण गावें।
खेत जोति कै अन्न उपजावैं, करघा चलाय कै कपड़ा बनावैं।।
चमड़ा काटि कै जूना बनावैं, पाथर काटि भगवान का बनावैं।।
तव आय विदेशी प्राण प्रतिष्ठा करैं।। सूदन का।।

"अत्त दीपो भव"

9. गारी

सुनौ दलित भइया....

तर्ज : आवो समधी बैठो टूटी पलंगिया हो-2।
हम हेरि लाई रिनिया उधार हाँ सीताराम से बने।।

1. सुनो दलित भइया मन में विचारौ हो, देखौ तोहरे माँ कितनी बुराई।।
सखी जय भीम भजो ।। टेक।।

2. सबरन भइया तुम्ह का नीचा बतावें-2 हो-2।
तोहरे देंहिया मॉ छुतिया लगाई।। सखी जय भीम भजो।।

3. लड़िकन का अपने तू नाहीं पढ़ाये-2 हो-2।
देहलेव बचपन में शादियाँ रचाई।। सखी जय भीम भजो।।

4. नाच नौटंकी देखै घर भर धायेव-2 हो-2।
भोजन खाई गइले कुकुरा बिलारी।। सखी जय भीम भजो।।

5. दारू सरबवा मॉ पैसा गवाँ गँवायेव-2 हो-2।
दिहलेव सगरौ कमइया मिटाई।। सखी जय भीम भजो।।

6. बीड़ी, तम्बाकू कै घर भर आदी हो-2।
देहलेव गँजवा से देंहिया जलाई।। सखी जय भीम भजो।।

7. लड़िकन पर रोक तनिकौ नाहीं लगायेव-2 हो-2।
खेलैं जुआरी के संग रोजै जाई।। सखी जय भीम भजो।।

8. छोड़ौ नशा बुद्ध धम्म अपनाऔ-2 हो-2।
'अनुरागी' रहे तुम्है समझाई।। सखी जय भीम भजो।।

10. गारी

पढ़ि लिखि लिहयो

तर्ज : तोहरे बहिनियाँ कै दुइतल्ला मकान सुनो समधी हमार।

पढ़ि लिखि लिहो दिहो झोपड़ी बिसार
कब करिहो सुधार ।। टेक।।

हमरे अंबेडकर बाबा तुम्हैं समझाये-2।
तुमका उठावे खातिर आपन जिन्दगी गँवाये-2।।
उन्हूँ के शिक्षा का दिहो है बिसार।। कब करिहो सुधार।।

छलिया संतापिन का गरवा लगायेव-2।
निकम्मन के आगे तुम शीश झुकायेव-2।
पानी चुल्लू से पीने का तुहैं धिक्कार।। कब करिहो सुधार।।

पंडित औ ठाकुर कै तलुआ चटला-2,
तुम इनके थाली में जेवन चहला-2।
मेहतर के संगमा तू कइला बिचार।। कब करिहो सुधार।।

व्याह किहो नौटंकी करायेव
पंडित बुलाय कै मंत्र पढ़वायेव।
नेगे मा मागेव है मोटर कार। कब करिहो सुधार।।

बासी खात मा बनेव भिखमंगा-2,
समधी खड़ा भय बराती में नंगा-2।
गयेव खिसिया जब होइगा उधार।। कब करिहो सुधार।।

कथा भागवत भंडारा ठानेव बड़े बड़े पंडन कै न्यौता मानेव।
बौद्ध धम्म कै राह न जानेव, जीव दया कै न्याय न जानेव।
'अनुरागी' कै डारेव बकरा हलाल।। कब करिहो सुधार।।

11. गारी

अंधविश्वास दूरि भगाओ

तर्ज : अपने पिया का हेरय निकलेव हो।
नार्हीं मिला रूपरेख हाँ सीता राम से बने।।

दुनिया बदलिगा जमनवा बदलिगा हो-2।
बबुआ काहे बैठैव तुर्हीं खूँटा गाड़ि-2।। तोहरे न सूझि परै। टेक।

अब तौ ज्ञान विज्ञान के युग है हो-2।
भइया तुहूँ देखौ अँखियां पसारी।। तोहरे न सूझि परै। टेक।

अंधविश्वास में जिन्दगी बितायेव-हो-2।
भइया पालेव सुअर, कूकुर, बिलारी।। तोहरे न सूझि परै।

छपरा पर चढ़ि आपन भरम गॅवायेव हो-2।
देखौ बेसरम बनी हैं घर की नारी।। तोहरे न सूझि परै।

शदिया वियहवा मा फूहरि पातरि गावे हो-2।
समधी अपनै गँवावे बैठा गारी।। तोहरे न सूझि परै। टेक।

लपसी सोहारी काली मइया का चढ़ायेव हो-2।
वहका खाइ गइले कुकुरा बिलारी।। तोहरे न सूझि परै। टेक।

अंधविश्वास अब दूरि भगाऔ हो-2।
'अनुरागी' लेतेव बौद्ध धम्म अपनाई।। तोहरे न सूझि परै। टेक।

12. उलारा

खत आय गवा...

तर्ज : दुइ हीरा बिकाने नबाव गलिया....
खत आय गवा भीम सम्विधनवा से।। टेक।।

भीम बावा कै बानी माता बहिना
लो मानी बावू भइया लो मानी-2।
जीना सीख लेव सीना तानि कै।। खत आय गवा।।

तुम्हें बोलै के खातिर आगे बढ़ने के
खातिर तुम्हें पढ़ने के खातिर।
सव लिखि दिहिन भीम सम्विंधनवा में।
खत आय गवा।।

आपन लड़िका पढ़ाओ, आपन लड़की पढ़ाओ,
चाहे डी.एम. वनाओ, चाहे डा. वनाओ,
चाहे मास्टर वनाओ, चाहे एस.पी. वनाओ,
चाहे सी.एम. वनाओ, चाहे पी.एम. वनाओ-2।
सव लिखि दिहिन भीम सम्विधनवा में। खत आय गवा।।

'अनुरागी' हो हिन्दू धरम भगाओ
वौद्ध धम्म अपनाओ।
नशा दूरि भगाओ आपन जिन्दगी वनाओ-2।
सव लिखि दिहिन भीम सम्विधनवा में। खत आय
गवा।।

"अत्त दीपो भव"

13. कहरवा

इटिंग मीटिंग के बहनवा

इटिंग मीटिंग के बहनवा कै लो एका ववुआ।। टेक।।

जातिन महिया जाति वनाइल, तुहमा किहिन फुटमतिया।
भाई-भाई में वैर कराकर तोहरा किहिन दुरगतिया।।
परखा इनकै तू नियतिया।। कै लो एका.।।

एक-एक कै के मारल गइलेव, केव मॉ केव न सहाई।
एक सियार हुँकरि जौ वोल वोलै, तौ सगरिव देंय चिल्लाई।
नाहीं सिआरन भइ अकिलिया।। कै लो एका.।।

जुरै अटै जौ तुँहका लागै, गड़ाय देय ये अँखिया।
इनके कहे करम कांड न होवे, तौ लूटै सब जजतिया।
छोड़ौ मनुवादी की वतिया।। कै लो एका.।।

धन, धरती, धरम और धन्धे पर इनहीं केर हुकमतिया।
सम्मान सहयोग और समर्थन, बन्द करो वहि जतिया।
इनकै तब्वे छुटी हुरमतिया।। कै लो एका.।।

असली रूप वधिक है इनकै, हम सब समझि न पाई।
नीति कै लग्गी नियति कै लासा, तुरतै देंय लगाई।।
वहिमा फँसिगे 'अनुरागी' भाई।। कै लो एका.।।

"अत्त दीपो भव"

14. कहरवा

हमका लूटि खाएव

हमका लूटि-लूटि खायेव, डोलि जायेव यहाँ से।। टेक।।

धन औ धरम जमीन छीनि कै, हमका तुम भरमायेव।
हम सवकै धन लूटि कै खाएव, लालच खूव कमायेव।।
हमका धोखवा में फँसायेव।। डोलि जायेव. ।।

ईश्वर कौन है जानि न पायेव, भारी जाल विछायेव।
गाँस, फाँस में वाँधि कै हमका, जनम-जनम अरिझायेव।
अपना पंडित भेष वनायेव।। डोलि जायेव. ।।

झूठ कपट, छल, वल न छोड़ेव त्रिगुन तिलक लगायेव।
भंडारा करिकै भरमायेव, कंजड़ एस चिल्लायेव।।
डेरा गुंडन कै लगायेव।। डोलि जायेव. ।।

साँच झूठ कै न्याय न जान्यो, अधरम खूव कमायेव।
'अनुरागी' कै कहा न मानेव व्यर्थ में जनम गँवायेव।।
वौद्ध धम्म न अपनायेव।। डोलि जायेव.।।

"अत्त दीपो भव"

15. कहरवा

जब तक पूजिहो...

जब तक पूजिहौ पाथर पानी, अन्तरयामी न मिलै।। टेक।।

डीह बाबा के चौरा पर को, बहुविधि होम कराइन।
छेवना तौ अगवानी दीना डीह बाबा बकरा पाइन।।
लपसी खाइन कुल परानी।। अन्तरयामी न मिलै।।

देवी जी के मन्दिर जाके, दर्शन किये मन मानी।
घर आयीं तब माता निकलीं दुलहिन होइगै कानी।।
पायो जिन्दगी के निशानी।। अन्तरयामी न मिलै।।

गया में जाकर श्राद किये, घर न्यौता बाभन मानी।
शान में आकर दान किये, तब दौलत सभी ओरानी।।
होइगे ठंढ गोपाला दानी।। अन्तरयामी न मिलै।।

खेत कियारी रेहन होइगा, यह तौ बड़ी नादानी।
'अनुरागी' बिन बौद्ध धम्म, के मिटी न ऐंचातानी।।
छोड़ि देव पाखण्डवाद को, सफल होय जिन्दगानी।।
रहिया बिना अंबेडकर भुलानी।। अन्तरयामी न मिलै।।

"अत्त दीपो भव"

16. कहरवा

लहरी पंचशील के झण्डा

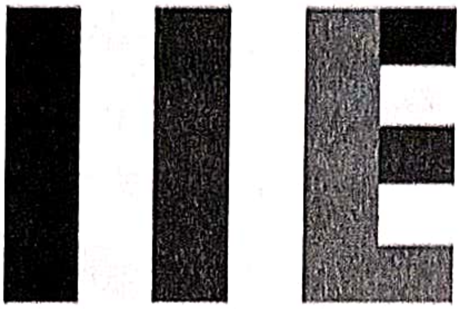

लहरी पंचशील कै झण्डा अब पाखण्डा न चली।। टेक।।

घर-घर थापेव देवी, देवता गाड़ि पताका लम्बा।
मिटटी कै देवखरा बनायेव, काटेव खसी कै मुंडा।।
मॉंस खायेव भरि-भरि हण्डा।। अब पाखण्डा न।।

रहम नहीं है दिल के अन्दर, बनेव धरम के बन्दा।
तन मन्दिर नापाक करिडारेव, खाय-खाय के अंडा।।
परबौ दोजख माँ लफंगा।। अब पाखण्डा न।।

बनेव पुजारी ठाकुर जी के, किहौ पुजाई धन्धा।
लै जजमान नरक मॉ जाबौ, जम्पुर चलहिं रन्दा।।
अब तौ छोड़ि देव घमण्डा।। अब पाखण्डा न।।

भीख मागि मन्दिर बनवइबो, घर-घर उगहेव चन्दा।
'अनुरागी' समझाइ कहत हैं, अस्ति कलस है फन्दा।।
गड़िगा पंचशील कै झण्डा।। अब पाखण्डा न।।

"अत्त दीपो भव"

17. कहरवा (नशा निषेध)

नशवा मटिया माँ मिलइहैं

नशवा मटिया माँ मिलइहैं, तू न खायो बलमा।। टेक।।

एक गंजेड़ी घर से निकला, लै औरत की साड़ी।
नौ आना में बेच दिया, फिर किया बजार तैयारी।।
तन के लुगरी ये बेचइहैं।। तू न खायो ।।

एक जुवाड़ी जुआ का खेलै, औरत का दांव लगाई।
हारि कै बैठा जुआ में औरत, रहिगा मुँह लटकाई।।
आपन जोड़ी बिछुड़इहै।। तू न खायो।।

एक तम्बाकू पीने वाला, पीतै माँ औंघाई।
चिलम गिरी है पलँग के ऊपर, गददा जरै रजाई।।
एक दिन अगिया ये लगइहैं।। तू न खायो।।

एक शराब का पीने वाला, नाली में भहराई।
मल मूत्र सब मुख में भरिगा, कहै औरत का माई।
इज्जत धरमौ ये गवइहैं।। तू न खायो।।

नशा किहा से पागल हौवौ, बुद्धी बुद्ध नशाई।
'अनुरागी' सब नशा छोड़ि, लो बौद्ध धम्म अपनाई।
तोहरा जनम सफल होइ जाई।। तू न खायो।।

"अत्त दीपो भव"

18. कहरवा

भलि कै लूटेव तू विदेशी

भलि कै लूटेव तू विदेशी, मोर अनारी दुनिया।। टेक।।

कितनौ विदेशियन का देखा, प्रथम रही झोपड़िया।
धोखा से धन लूटि कै हमरा, बनायो महल अटरिया।।
घर माँ भरिका सोना चँदिया।। मोर अनारी।।

पंखा हीटर लगा रेडियो, बिजली केर रोशनियाँ।
कुर्सी मेज लगा कमरे माँ, वैठेव दुइव परनियाँ।।
वाजै तबला ढोल हरमुनिया।। मोर अनारी।।

दूध मलाई रवड़ी चाटै, पूड़ी साग चटनियाँ।
गुंडा गरदी करैं रात दिन, दुखिया दलित परनियाँ।।
भागे पावें न ठेकनियाँ।। मोर अनारी।।

पढ़े लिखे कै हेल्फर बनिकै, डारेव ओट हमारा।
मेरे भाई यस विहवल हैं, लेते फिरैं सहारा।।
गावे 'अनुरागी' कहनियाँ।। मोर अनारी।।

"अत्त दीपो भव"

19. भजन

मानौ पिया देशवा गरद होइ जाई

शेर : बन्द आँखें खोलकर उलझा हुआ दिल थाम लो।
हर बसर हर श्वांस में, अंबेडकर का नाम लो।।
जब जन्म लेने और मरने का तरीका एक है।
तो आदमी और आदमी में ये कैसा भेद है।।
मानौ पिया देशवा गरद होइ जाई।। टेक।।

(1) हमहीं सुरू कै आदिवासी किसनवा।
जोती बोई खेती करी पशु कै पलनवा।।
आये दूसरे मुलुकवा से गइले आई।। मानौ पिया।।

(2) भारत भुइयाँ कै हमहीं ललनवाँ।
जेती बोई खेती करी पशु कै पलनवाँ।।
दूध घी कै नदिया हिदले बहाई।। मानौ पिया।।

(3) अन्न धन से भारत का स्वर्ग बनवले।
सोने के चिड़िया तब नमवा धरवले।।
यही बीच धोखवा गइले समाई।। मानौ पिया।।

(4) कैसे कै चोरवा घुसल यदि देशवा।
सारी-सारी बतिया बतावे इतिहसवा।।
हमरे देशवा में अड्डा लिहले जमाई।। मानौ पिया।।

(5) खैवर वोलन दर्रा के राहीं। घुसल चोर इतिहसवा गवाही।
हमरे धन धरती पर गइले ललचाई।। मानौ पिया।।

(6) छल-वल कै के लिहिन अपनाई। मारि पीट हमें दिहले भगाई।
तब से धन धरती कुल लिहिन अपनाई।। मानौ पिया।।

(7) खेतिया कै कमवा जव करत नाहीं सपरै। तव हमरेन का ये हेरि-हेरि पकरैं।
'अनुरागी' लाके गववाँ के दक्खिन दिहले वसाई।। मानौ पिया।।

"अत्त दीपो भव"

20. सोहर

माता सावित्री

कहंवा जन्मे बुद्ध गौतम? कहंवा बाबा भीम कहंवा बाबा भीम हो?
सखियाँ कहंवा जन्मी माता सावित्री?
तीनों घर सोहर तीनों घरे मंगल हो।।

लुंबिनी वन जन्मे बुद्ध गौतम, इंदौर बाबा भीम, इंदौर बाबा भीम हो।
सखियाँ सतारा जिला माँ जन्मी माता सावित्री,
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

केकरे कोखियाँ जन्मे बुद्ध गौतम? केकरे बाबा भीम? केकरे बाबा भीम हो?
सखियाँ केकरे कोखियाँ जन्मी माता सावित्री?
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

महामाया कोखियाँ बुद्ध गौतम, भीमा माता कोखियाँ बाबा भीम, भीमा के
बाबा भीम हो।
सखियाँ लक्ष्मी बाई कोखियाँ जन्मी माता सावित्री,
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

काव किहिन बुद्ध गौतम? काव बाबा भीम? काव बाबा भीम हो?
सखियाँ काव किहिन माता सावित्री?
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

ज्ञान दिहिन बुद्ध गौतम! संविधान बाबा भीम!
संविधान बाबा भीम हो। सखियाँ हम सबका पढ़ाइन माता सावित्री!
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

अनुरागी मंगल गावैं बहुजन का सुनावैं,
सुनाइया फल पावें, सुनाइया फल पावैं हो।
सखियाँ जे यह मंगल गावैं, ते गाय के सुनावैं, ते गाय के सुनावैं हो।।

"अत्त दीपो भव"

21. विरहा

हमें धोखवा से निर्धन बनाय दिहले

हमें धोखवा से निर्धन बनाय दिहले।। टेक ।।
पहले नाहीं रहा जतिया औ भेदवा। नाहीं रहा छुतिया वरण कौनो भेदवा
हमरे जतिया में जतिया बनाय दिहले।। हमें धोखवा से।।

पढ़कर देखो मनु स्मृत वेदवा। हिन्दू कै खुलि जइहैं शुरुवे के भेदवा।।
यहि वेदवा में भेदवा छुपाय दिहले।। हमें धोखवा से।।

पढ़व लिखव हमरेन कै रोकाइन, हमरेन का शूद्र अछूत बनाइन।।
नारी शूद्रन से सेवा कराय लिहले।। हमें धोखवा से।।

रोजी रोजगार नाहीं खेती औ मकान नाहीं।
शूद्रन के लड़िकन का रहै का ठेकान नाहीं।
हिन्दू गारी मार दैके अघवाय दिहले।। हमें धोखवा से।।

इतना सताइन हिन्दू कितना गिनाई।
सूख गइले आँख रोये आवे न रोवाई।
केहू दुनिया में नाहीं सहाय भइले।। हमें धोखवा से।।

वावा अंवेडकर हमें दिहले जगाई।
मरल समाज फिर से दिहले जियायी।
जो पढ़ने का दरवाजा खोलाय दिहले।। हमें धोखवा से।।

डॉ. अंवेडकर दिहले वुद्ध कै धरमवाँ।
अव न डिगाइपइहैं कौनो जमनवाँ।
'अनुरागी' झूठे ईश्वर से नाता छोड़ाय दिहले।। हमें धोखवा से।।

शेर : क्या दर्दे दिल में जाति के अपमान का होता नाहीं।
क्या गरीवी दीनता को देख दिल रोता नहीं।।

22. देशभक्त वावासाहेव

बाबा साहब को चैन न आवे

तर्ज : हाथ में मेहंदी मांग सेंदुरा.....
कजरवा हो गइला।। टेक।।

चमचागिरी मनुवादी से गुलाम, ई देशवा हो गइला।
वावा साहव को चैन न आवे, वरवाद ई देशवा हो गइला।। टेक।।

1. एक समय गांधी नेहरू को, काला पानी हो गइला।
भीम वावा को नींद न आवे, सोचतै मा सवेरवा हो गइला।
चमचागिरी।

2. वावा साहव और सर रैमजे में वात वतगढ़ हो राइया।
जिसके घर में रहते हो उसे देश निकाला क्यों कइला।। चमचागिरी।।

3. देश हमारा राज्य तुम्हारा, मनमानी ससनवा तू कइला।
माफ नहीं इतिहास करेगा, सर कान खोल के तू सुनिला।।
चमचागिरी।।

4. वोले रैमजे अंवेडकर, नाहक में वकालत करते हो।
दाँव परै ये तुम्हका का, न छोड़ि हैं ई वात तू काहे भुला गइला।।
चमचागिरी।

5. हम सवका उददेश्य एक है, आजादी कै विगुलवा वजि गइला।
होश करो सर न्याय करो, अन्याय का वेहद हो गइला।।
चमचागिरी।

6. वावा साहव की देश भक्ति पर, रैमजे मन खुश हो गइला।
भई माफ सजा गाँधी नेहरू की, 'अनुरागी' कै मन खुश हो गइला।।
चमचागिरी।

23. चेतावनी बिरहा

काहे जय भीम कहते सरम लागे

तोहके बतिया के कहते भरम लागै,
काहे जय भीम कहते सरम लागे।। टेक।।

रहिला इतिहास को अपने छिपाई,
यहि से कमाई को अपने गँवाई।
पावला डंडा तो कहला गरम लागै।। काहे जय ।।

देखो तनि आपन पलक उठाई।
भइलेव गँवार कब तोहका बुझाई,
धोखवा कमवले समझि नहीं पाई।।
तोहका मिटावे खातिर कहला वरम लागै।। काहे जय।।

उठो ए गँवार तनी सूरत दिखाओ।
अन्ध विश्वास भरम दूरि अब भगाओ।
अपने लड़िकवनका विद्या पढ़ाओ।
काहे मुरचा पे खुनवा नरम लागै।। काहे जय।।

चाहो सुधार कौम आगे बढ़ावा।
बदलो विचार बुद्ध धम्म अपनावा।।
सूतल जमतिया का फिर से जगावा,
काहे 'अनुरागी' बतिया जहर लागै।। काहे जय।।

"अत्त दीपो भव"

24. सोहर

तथागत बुद्ध जयंती (1)

महामाया सुतली सेजरिया तौ अपनी महलिया,
सपन एक देखैं-सपन एक देखैं हो। ललना आये हैं एक बोधि सत्य,
माता से अरज करैं-माता से अरज करैं हो।। टेक।।

हमरी बचनिया सुनि लेव,
महारानी मानि लेव-महारानी मानि लेतिव-2 हो।
रनिया बनि जातिव माता हमार,
जनम हम लेबै-जनम हम लेबै हो।। महामाया।।

महामाया सपन बिचारैं, तौ वचन उचारैं-बचन उचारैं हो।
ललना बनि जाओ पुतवा हमार।
जनम आइ लेतेव-जनम आइ लेतेव हो।। महामाया।।

आठ मास जब बीते औ, नववाँ महीना लागे-नववाँ महीना लागे हो।
ललना दशवो महीना जब लागे,
तौ राजा से अरज करै-2 हो।। महामाया।।

सुनहु-सुनहु मोरे राजा, सुनहु सिरताजा हो,
राजन भेजि देतेव हमें नइहरवा
होंहीं बालक जनवै-2 हो।। महामाया।।

सजि धजि चलीं महारानियाँ तौ अपने नइहर चलीं-हो-2।
रनिया आधे जंगल जव पहुँचैं तो डोलवा रोकावें हो।। महामाया।।

रनियाँ पकरैं बौद्ध वृक्ष डरिया तौ ललना जनम भये-हो-2।
ललना 'अनुरागी' मंगल गावें सुनइया फल पावें हो।। महामाया।।

25. सोहर

तथागत बुद्ध जयंती (2)

महामाया बड़ी हर्शयिं, बन में गौतम भये।। टेक।।

लुम्बिनी बन में ससुर मोरा होते-2।
वे तौ कथिकन लौते बुलाय।। बन में।।

लुम्बिनी बन में सास मोरी होती-2।
वे तौ गोतिनी लौतीं बुलाय।। बन में।।

गोतिनी औतीं मंगल गौतीं-2।
ससरू मुहरा देते लुटाय।। बन में।।

जौ लुम्बिनी बन में जेठनी मोरी होतीं-2।
वे तौ उबटन लौतीं पिसाय।। बन में।।

जौ लुम्बिनी बन में ननद मोरी होतीं-2।
वे तौ कजरा देतीं लगाय।। बन में।।

पाँच कदम गौतम उठि धाये-2।
माता महा माया मुसकायँ।। बन में।।

जौ लुम्बिनी बन में 'अनुरागी' होते-2।
वे तौ मंगल गौतें बनाय।। बन में।।

"अत्त दीपो भव"

26. गारी

हाँ बाबा भीम से बने

तर्ज : नौआ औ बारी खोजत पंथ हारे हो। नार्हीं मिला रूपरेख.....

अब तौ दलित भइया, मन में विचारौ-2 हो।
देखो तोहरे माँ कितनी बुराई। हाँ बाबा भीम से बने।। टेक।।

आये विदेशी तुम्हैं नीचा बतावें-2 हो।
तुम तौ अपनेन माँ छुतिया लगाई।। हाँ बाबा भीम से...।।

लड़िकन का अपने तुम नार्हीं पढ़ायेव-2 हो।
दिहलेव बचपन में शदियाँ रचाई।। हाँ बाबा भीम से...।।

ताड़ी सरववा माँ पैसा गँवायेव-2 हो।
नार्हीं कइलेव अपने घर की सफाई।। हाँ बाबा भीम से...।।

लड़िकन पे रोक तुम नार्हीं लगायेव-2 हो।
घूमैं रोजे बजरिया में जाई।। हाँ बाबा भीम से...।।

मेला और नाच सबहिं मिलि देखेव-2 हो।
बौद्ध धम्म नार्हीं लिहेव अपनाई।। हाँ बाबा भीम से...।।

'अनुरागी' लेतेव बौद्ध अपनाई-2 हो।
तोहरौ जनम सफल होइ जाई।। हाँ बाबा भीम से...।।

27. भजन–ज्ञान प्राप्ति

पिपर तरै

मिलिगै ज्ञान कै ठिकाना पिपर तरै।। टेक।।

यह संसार दुखों का सागर-2 है।
जनम मरण दुःख जाना।। पिपर तरै।।

कैसे दुःखों से मुक्ति होइहैं-2।
यह मन में ठाना।। पिपर तरै।।

ज्ञान के खोज में वन-वन भटके-2।
ऋषि मुनी के ढंग जाना।। पिपर तरै।।

तवहूँ मन में जव शान्ति मिली नहीं-2।
तब किहौ वोध गया कै ठिकाना।। पिपर तरै।।

वैठे पिपर तरे मारि समाधि-2।
भये तन-मन से बेगाना।। पिपर तरै।।

खीर खिलाइन सुजाता मनौती-2।
भये तन मन से सुजाना।। पिपर तरै।।

यह तन वीणा तार सरीखा-2 हो।
न अति ढीला न ताना।। पिपर तरै।।

'अनुरागी' वौद्ध धम्म लखावें-2 हो।
भूले हुए का रहिया बतावें।।
सब लोग पंचशील अपनाई।। पिपर तरै।।

"अत्त दीपो भव"

28. गीत

भला बुरा कौन सा दिन?

तर्ज : भैरवी..... हमें बताओ रानी, कौन दिना हम बुरा मानी।। टेक।।

परिवा का स्नान दान कर, कुल परिवार नहायेव।
दुतिया को जम दुतिया कहकर, भइया दूज मनायेव।
तीज को कजली तीज मानि, शंकर का जल नहवायेव।।
हमें बताओ।।

चौथ का करवा चौथ मनायेवा, पति कै वृत कहायेव।
पंचमी का पूजे नाग देवता, लावा दूध चढ़ायेव।
हलुवा पूड़ी घर भर खावेव, नाग देव गये मानी।।
हमें बताओ।।

छट्ठी का लड़िकन वृत रहकर, पूजेव माता भवानी।
सप्तमी का शुक्ला सप्तमी, भूखी रहिव मनमानी।
अष्टमी का जन्म अष्टमी मनायेव, तब कृष्णदेव गये मानी।।
हमें बताओ।।

नवमी का तुम राम जन्म कहि, सरयू नदी नहायेव।
दशमी का तुम विजयदशमी कहि, किहौ दशहरा मनमानी।
एकादशी व्रत जग जाहिर है, रतिया माँ सूप बजायेव मनमानी।।
हमें वताओ।।

द्वादशी संक्रान्ति पूजा करिकै देव मनायेव।
तेरस का धन तेरस परछेव, धन कै आस लगायेव।
धन देकर हे शंकर वावा, हमैं किहौ धनवानी।।
हमें वताओ।।

चतुर्दशी का अनन्ता पूजेव खूब, आनन्द मनायेव।
अमावस्या को दिया जलाकर, जग मग ज्योति जलायेव।
पूरणमासी को 'अनुरागी' पूर्णिमा व्रत राखेव मनमानी।
।। हमें बताओ।।

"अत्त दीपो भव"

29. ढोंग पाखण्ड

हमें दुविधा की रहिया देखावेला

तर्ज : बिरहा भोजपुरी

यहाँ नइहर नगरिया बतावेला, वहाँ सासुर डगरिया देखावेला।
हमें दुविधा की रहिया देखावेला।। टेक।।

मरले पर जब ससुरे का जाला, नइहर में दुल्हा केका खोजला।
झूठै ऊँ तुम्हका भरमावेला।। हमें दुविधा।।

नइहर से ससुरे कै कितना है दूरी? कै किलोमीटर है जाना जरूरी।
भारत में बाँटै कि है कौन देशवा में?
काहे न नक्शा बतावेला।। हमें दुविधा।।

जर्मन जापान स्वर्ग नाहीं इंग्लैण्ड में,
खोजली पुर्तगाल नाहीं मिला थाईलैण्ड में।
रूस अमेरिका जब लौटेल चाँद से,
कहले पुँछले पर मूरख बतावेला।। हमें दुविधा।।

हाथ जोरि उनसे हम कइला अरज हो,
चलो चली जीतै देखावा स्वर्ग हो।
रहिया डगर कै किराया हमार हो,
हमें काहे न जगहा बतावेला।। हमें दुविधा।।

राति खइवा खिचड़ी औ सवुआ अचार हो।
कितना है? क्वाटर नं. बावा कै हमारे हो।
धरती स्वर्ग औ नरक यहि ठहुँआ हो।
चलो चली देखाई दिल्ली औ लखनउवा हो।
जहाँ स्वर्ग वाले मक्खन उड़ावेला।। हमें दुविधा।।

दान पुन्य हिआँ करों, हुँआ सब मिलिहैं, अपना करजा देकै देहिं वसुलिहैं।
'अनुरागी' झूठे भरमावेला।। हमें दुविधा।।

"अत्त दीपो भव"

30. ग़ज़ल

बहुजनों के खातिर जिसने सही मुसीबत भारी है

भूल न जाना भीमराव को बिनती यही हमारी है।
बहुजनों के खातिर जिसने सही मुसीबत भारी है।। टेक।।

अत्याचार हुआ दलितों पर एक पत्र ये आया था।
पानी तक पीने नहिं पाते सभी दलित तरसाया था।।
वर्णन नहिं कर सके किसी विधि, करी बहुत ही ख्वारी है।
।। बहुजनों।।

बाबा साहब महाड़ जाकर, ये सन्देश सुनाया था।
मानवता के रक्षा के हित, सबको पाठ पढ़ाया था।
किया अनेकों दलित इकट्ठे, कीन्हीं बिकट तयारी है।।
।। बहुजनों।।

कर में लिये बाल्टी डंडा, चला प्रदर्शन मन भाया।
चाबदार तालाब जायकर, पानी सबको पिलवाया।।
हुआ बहुत संघर्ष वहीं पर, पाई विजय बहुत भारी है।।
।। बहुजनों।।

मन्दिर में प्रवेश था वर्जित, नासिक मन्दिर खुलवाया।
सत्याग्रह किया बहुत ही, न्याय का साहस नहिं बिसराया।।
जनता जय-जय कार करै, आपकी कोटि कोटि बलिहारी।
।। बहुजनों।।

आरक्षण दिलवाय तुमने, काम किया अति आसानी।
एक नया इतिहास बनाकर, मूक जनों को दिया बानी।।

प्राण दान देकर गाँधी को, बहुत बड़ा उपकार किया।।
देखि आपका क्रिया कलाप अब 'अनुरागी' आभारी है।
।। बहुजनों।।

"अत्त दीपो भव"

31. गीत

पाखण्ड दलित अछूत कैसे?

होटरे मा छूत नाहीं, मोटरेम छूत नाहीं, घरहिं में डारै डड़वार कैसे?
इक मियानी में दुइ-दुई तलवार कैसे?।। टेक।।

हमरे धरम का चारों धाम करै गइले।
बोरा यस कसाइल पंच उनहूँ कसइलें।।
काहे न अकेलै मोटर रिजरब करवले।।
सटि-सटि के बैठे बाभन औ चमार कैसे।। इक मियानी।।

बबुआ के भये चमाइन दुधवा पिलावे।
सेवरी माँ मलकिन मा दूनौ जून लतियावे।।
उहौ पाँच पानी परवारन कहावे।
चलैं घुटना से लेहँगा बटोर कैसे।। इक मियानी।।

हॉड़ नोचै कुकुरा वका गद्दा पर सोवावैं।
घरहीं में दूनौ जून देवखरा कड़ावें।।
कोरा में बिठाकर वोका थाली में खिलावें।
देते मनई के बचवन का दुदकार कैसे।। इक मियानी।।

अलग-अलग नाहीं गिलसवा पियाला।
एकै प्लेट और एकै पियाला।।
मछली कै टिकिया जहाँ बेलचा से झोंकाला।।
घटै होटरे माँ धरम न तोहार कैसे।। इक मियानी।।

जोतल, बोवल, कूटल, पीसल अन्न जेकर खाला।
गहगह के गटकत का छूत न लगाला।।
मनई के छुए धरम कैसे घटि जाला।
'अनुरागी' बने हिन्दू धरम के टेकेदार कैसे।। इक मियानी।।

32. कहरवा

हम सपनवा देखा नाय

आवा बसपा कै शरनवाँ हम सपनवा देखा नाय।। टेक।।

मंगल मीटिंग तहसील दिवस में जनता कै होवै कमवा।
लेखपाल कानूनगो भइया कई न पावैं वहनवा।।
छुटहिं नायब साहब कैय परनवा।। हम सपनवा देखा नाय।।

गैस जलाकर सड़क बनावें रातिम करिहैं कमवा।
तहसीलदार तक ईंटा ढोवें अंबेडकर ग्राम दरमियनवाँ।।
फटिगा जे.ई. साहब कै करमवा।। हम सपनवा देखा नाय।।

नली खड़ंजा के जाँच में भइया, फँसिगे सिकेटरी प्रधनवा।
हार्ट फेल डी.एम. साहव कै, पैदल होइ गइले कपतनवा।।
कटिगा डी.पी. आरो. कै परनवाँ।। हम सपनवा देखा नाय।।

कुर्सी पर खड़ा होय कमिश्नर साहब पकड़ें दोनों हाथ से कनवा।
मन्दिर जाय प्रसाद चढ़ावें, वचायेव मायावती से भगवनवाँ।।
रोवें वड़के अफसरन कै जननवा।। हम सपनवा देखा नाय।।

बड़े-बड़े बदमासन देखा विल्ली वने जवनवाँ।
गुंडा सब गुंडी बनि बैठे लागे जेल ठेकनवा।।
ऐसन माया कै ससनवा।। हम सपनवा देखा नाय।।

कहैं 'अनुरागी' सुनो शिव चरन अइहैं तोर शासनवाँ।
बैठ जाओ सव हाथी ऊपर, तब्बै होई कल्यनवाँ।।
मानो साहव कांशीराम कै कहनवाँ।। हम सपनवा देखा नाय।।

"अत्त दीपो भव"

33. सास/पतोह

एक तौ हमहीं रहेन बौरहिया

एक तौ हमहीं रहेन बौरहिया, हे अम्मा तहूँ बौराय गयू रे।। टेक।।

जौने बँसवा का चीरे धरिकरवा, सुपवा बेनवा बनाय डारे रे।
वहि बँसवा के बनायेव है बाले मियाँ सिन्नी कैसे वे खइहैं रे।
।। एक तौ।।

जौने कगजा का पीसैं मशीनियाँ, कॅपिया कितबिया बनाय डारे रे।
वहि कगजा के बनायेव है तहजिया कैसे मलीदा वे खइहैं रे।
।। एक तौ।।

जौने पैरा का खॉय गऊ माता, खदिया लतेरवा बनाय डारैं रे।
वहि पैरा के बनी दुर्गा मइया, कैसे खॅसी वे खइहैं रे।
।। एक तौ।।

जौने पथरा काटै पथरकटवा, सिलिया औ लोढ़वा बनाय डारै रे।
वहि पथरा के बने राम जानकी, कैसे लड्डुवा वे खइहे रे।
।। एक तौ।।

जौने मटिया का कचरै कोहरवाँ, हड़िया गगरिया बनाय डारै रे।
वहि मटिया के बनी काली माई। 'अनुरागी' कैसे लपसी वे खइहै रे।
।। एक तौ।।

"अत्त दीपो भव"

34. भजन चेतावनी

पंडित सबका हिंदू माने ला

तर्ज : बिरहा

कुर्मी, कुम्हार, कलवार, अहिर, भर, पंडित सबका हिन्दू माने ला,
लेकिन शूद्रै वरण में ही जानेला।। टेक।।

चॉई, मल्लाह और बढ़ई लोहार सब,
हम बड़ा-2 करैं तकरार सब।
येऊ नाई से पैर धोवावेला।। पंडित सबका।।

ढाढ़ी पासी औ खटिक बरवार सब-2, आपस में छोट बड़ा करैं तकरार सब।
नट्ट पथरकट्ट औ चमार चमकटिया-2, करैं पंचायत कटै नहिं रतिया।
ऐऊ धोबी से उठइया धोवावेला।। पंडित सबका।।

भितरी से बाहर लै कमवा करावैं-2,
सबके बदनिया मॉ छुतिया लगावें।
इन्हें खात की बेरिया कुकुर यस दुरियावेला।। पंडित सबका।।

अहिर, कुर्मी, कुम्हार आदि को बड़ा माने-2,
शादी बियहवा में पकिया पिलावें।
इनसे कटहल आलू, घुइया छिलावेला।। पंडित सबका।।

जतिया बनाये है कूट कै बिचरवा-2,
तेली का कूटै अहिर लैके एड़िया।
सबहीं का फोरि-2 कुटवावेला।। पंडित सबका।।

कहैं 'अनुरागी' भीम बाबा जगावें-2,
बौद्ध धम्म की रहिया लखावें।
काहे अबहिउ समझ नहिं आवेला।। पंडित सबका।।

35. ग़ज़ल

देश के नौजवानों उठो शान से

देश के नौजवानों उठो शान से, अपनी हस्ती मिटा दो वतन के लिए।
बागवानी का दावा है तुमको अगर-2,
तो खून देना पड़ेगा चमन के लिए।। देश के।।

भीम बाबा है भारत पे शैदां हुए-2 लाखों ही भीम भारत में पैदा हुए।
मरने वाला कभी जग से मरता नहीं-2,
मर गया हो जो अपने वतन के लिए।। देश के।।

दलित के नौजवानों रहो तुम निडर-2,
मरके भी नाम जग में रहेगा अमर।
मर्द मरते सदा नाम के वास्ते-2,
और नामर्द मरते है धन के लिए।। देश के।।

यह तो सारे जमाने का दस्तूर है-2,
कोई मजबूर है कोई मगरूर है।
नींद मखमल पे आती किसी को नहीं-2,
कोई मरता है दो गज कफन के लिए।। देश के।।

सीख 'अनुरागी' की दलितों सुन लीजिए-2,
बाबा जी के मिशन को जान लीजिए।
बौद्ध धम्म पे लगा दो बाजी सुनो-2,
बाबा जी के मिशन को दुवा कीजिए।। देश के।।

"अत्त दीपो भव"

36. बिरहा

दाढ़ी मोंछ छिलाय के नाय

पितर का पानी देत हैं राइयाँ,
मूड़ मुड़ाय के दाढ़ी मोंछ छिलाय के नाय।। टेक।।

पितर का कुछ न पता मुकाम,
पानी देतै करत प्रणाम।
ताल मा जल उलचावैं,
कुश पैंती पहिनाय के।। दाढ़ी मोंछ।।

मरतै पिता का दिहो जलाई,
पानी कैसे उन्हें पिलायो।
जलहिम जल उलचावैं,
भकुआ तुम्हें वनाय के।। दाढ़ी मोंछ।।

बुढ़िया बुढ़वा करैं विदाई,
कवहीं धरै उन्हें मल्लाही।
कौन घाट उतरिहैं,
जाते नहीं वताय के।। दाढ़ी मोंछ।।

कहते 'अनुरागी' समझाई बुद्धी बुद्ध धम्म अपनाई,
सवलो बौद्ध धम्म अपनाई,
अपना जीवन सफल वनाय के।
कुश पैंती धरवाय के नाय।। पितर का पानी।।

"अत्त दीपो भव"

37. सोहर

महामना सन्त गाडगे जयन्ती

23 फरवरी के दिनवा 1876 सन्-2 हों,
ललना झिंगुरा राम जी के भवनवाँ तौ तोहरा जनम भवा हो।। टेक।।

शेण गाँव जिला अमरावती में, तौ डेबू का जनम भवा-2 हो।
ललना सक्खू वाई माता के उदर से, तौ तोहरा जनम भवा हो।।
23 फरवरी।।

घेरे हैं काली बदरिया गरज घन घोर करै-2 हो।
ललना बरसत रिमझिम मेंहू, तौ डेबू कै जनम भवा हो।।
23 फरवरी।।

शेण गाँव की सब बाला तौ मंगल गावें-2 हो।
ललना झिंगुरा राम खुशियां मनावें मुहर लुटावैं हो।। 23 फरवरी।।

सन्त गाडगे कै जनमवा खुशी सब भइलै-2 हो।
ललना 'अनुरागी' मंगल गावैं, सुनवइया फल पावै।। 23 फरवरी।।
।। उलारा।।

सुखना बुवा आई कजरा लगावैं, वे तौ माँगे,
हाथ कै कंगनवा ललनवाँ न छोड़ैं हो।
सक्खू बाई मनहिं मन हर्षवें, वे तो देवा न चाहै, कँगनवा।।
।। ललनवाँ।।

सक्खू बाई का 'अनुरागी' समझावैं,
माता दै डारौं हाथ कै कंगनवा।। ललनवाँ।।

"अत्त दीपो भव"

38. सोहर

संत शिरोमणि रविदास साहब जयन्ती

माता करमा बड़ी हर्षाय रविदास पैदा हुए।। टेक।।

जौ मड्डुआडीह में सास मोरी होर्ती-2।
वे तौ गोतिनी लौर्ती बुलाय।। रविदास।।

जौ मड्डुआडीह में ननद मोरी होर्ती-2।
वे तौ देना देर्ती जलाय।। रविदास।।

जौ मड्डुआडीह में देवर मोरा होते-2।
वे तौ बंशिया देते बजाय।। रविदास।।

जौ मड्डुआडीह में जेठानी मोरी होर्ती-2।
वे तौ उबटन लौर्ती पिसाय।। रविदास।।

जौ मड्डुआडीह में ससुर मोरे होते-2।
वे तौ कथिकन लौतें बुलाय।। रविदास।।

मान दास पिता खुशियां मनावें-2।
वे तौ मुहर रहे हैं लुटाय।। रविदास।।

जौ मड्डुआडीह में 'अनुरागी' होते-2।
वे तौ मंगल गौते बनाय।। रविदास।।

39. सोहर

महामना जोतिबा राव फुले जयन्ती

माता चिमड़ा बड़ी हर्षायँ जोतिबा पैदा हुए।। टेक।।

जौ पूना में ससुर मोरा होते - 2 ।
वे तौ कथिकन लौते बुलाय।। जोतिवा।।

जौ पूना में सास मोरी होतीं - 2 ।
वे तौ गोतिनी लौतीं बुलाय।। जोतिवा।।

जौ पूना में ननद मोरी होतीं - 2 ।
वे तौ कजरा देतीं लगाय।। जोतिबा।।

जौ पूना में जेठानी मोरी होतीं - 2 ।
वे तौ उबटन लौतीं पिसाय।। जोतिबा।।

पिता गोविन्दराव खुशियाँ मनावें - 2 ।
वे तौ मुहर रहे हैं लुटाय।। जोतिबा।।

'अनुरागी' यह मंगल गावें - 2 ।
सभी स्रोता धन्य होय जायँ।। जोतिबा।।

"अत्त दीपो भव"

40. सोहर

सरदार पटेल

कहंवा जन्मे बुद्ध गौतम? कहंवा बावा भीम कहंवा बावा भीम हो?
सखियाँ कहंवा जन्में भाई वल्लभ?
तीनों घर सोहर तीनों घरे मंगल हो।।

लुंबिनी वन जन्मे बुद्ध गौतम, इंदौर बावा भीम, इंदौर बावा भीम हो।
सखियाँ करमसद मां जन्में भाई वल्लभ,
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

केकरे कोखियाँ जन्मे बुद्ध गौतम? केकरे बावा भीम? केकरे बावा भीम हो?
सखियाँ केकरे कोखियाँ जन्में भाई वल्लभ?
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

महामाया कोखियाँ बुद्ध गौतम, भीमा माता कोखियाँ बावा भीम, भीमा के बावा भीम हो। सखियाँ लाडो बाई कोखियाँ जन्में भाई वल्लभ, तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

काव किहिन बुद्ध गौतम? काव बावा भीम? काव बावा भीम हो?
सखियाँ काव किहिन माता सावित्री?
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

ज्ञान दिहिन बुद्ध गौतम! संविधान बावा भीम!
संविधान बावा भीम हो।
सखियाँ अखंड भारत बनाईन भाई वल्लभ!
तीनों घर सोहर तीनों घर मंगल हो।।

अनुरागी मंगल गावैं बहुजन का सुनावैं,
सुनाइया फल पावें, सुनाइया फल पावैं हो।
सखियाँ जे यह मंगल गावैं, ते गाय के सुनावैं, ते गाय के सुनावैं हो।।

"अत्त दीपो भव"

धम्म प्रेमियों का सहयोग

01. मा. राम कुमार राव, मो. 9839186870
02. मा. राम प्रकाश बौद्ध, मो. 9451038701, 8423809053
03. मा. किशोरी लाल गौतम, मो. 6307602508, 9792698011
04. मा. अवधेश कुमार नन्द, मो. 9839142611
05. मा. छोटे लाल
06. मा. बाबू लाल
07. मा. मोतीलाल गौतम
08. मा. बाबू लाल राव, मो. 6387652640
09. मा. बाबू विनोद कुमार राव
10. मा. राम सरन बौद्ध, मो. 6389566516
11. मा. डॉ. नरेन्द्र कुमार, मो. 6386879578
12. मा. डॉ. डी.के. भास्कर, मो. 945221515
13. मा. डॉ. राम चन्दर भास्कर, मो. 9120315868, 9453504099
14. मा. डॉ. राम प्रेम वर्मा, मो. 9453268520
15. मा. डॉ. एस. चन्द्रा, मो. 9452066155
16. मा. रमेश कुमार गौतम, मो. 9792047047
17. मा. दयाराम रावत, मो. 9838709845
18. मा. राधेश्याम पासवान
19. मा. राम सुहावन पटेल, मो. 9161178898
20. मा. शिवपाल
21. मा. राधेश्याम मौर्य
22. मा. राम अभिलाख मौर्य
23. मा. महादेव प्रसाद विश्वकर्मा, मो. 8858384013
24. मा. शिवकुमार विश्वकर्मा, मो. 9554070809, 9580356552
25. मा. राम पाल
26. मा. अजय कुमार, मो. 9670680430
27. मा. वी.पी. विवेक, मो. 8924945010
28. मा. रामभरोसे गौतम, मो. 7388877738
29. मा. संगम दास
30. मा. रामकरन गौतम, मो. 9919401185
31. मा. अशर्फी लाल राव, गोण्डा
32. मा. अनुपम राव
33. मा. रामदास राव
34. मा. हरि प्रसाद गौतम, मो. 8299625225

क्रमशः शेष अगले अंक में...

रचयिता परिचय

प्रखर गायक और गीतकार मा. राम चरन अनुरागी का जन्म 24 अप्रैल 1947 को ग्राम बढ़या, चौबेपुरवा; मौजा बनकसिया; थाना मोतीगंज; तहसील मनकापुर जनपद गोंडा में हुआ था। अत्यंत कमजोर पृष्ठभूमि में होने के कारण अनुरागी जी की विशेष शिक्षा दीक्षा नहीं हो सकी। परंतु अपने गीतों के माध्यम से इन्होंने लोकगायन में अपनी विशिष्ट पहिचान बनाई है। बहुजन समाज के ऊपर जबरन लादी गई निर्योग्यताओं की पीड़ा को उन्होंने बहुत कम उम्र में ही महसूस कर लिया था। भारतीय समाज व्यवस्था में सर्वत्र व्याप्त जातिगत अत्याचार और अकारण उत्पीड़न जिसे धर्म का नाम देकर सम्मान का विषय बना दिया गया ऐसी व्यवस्था के प्रति जनमानस को जागरूक करने का महान कार्य आपके द्वारा निरंतर किया जा रहा है। यह रचयिता की पहली कृति है।

सम्यक प्रकाशन®
32/3, पश्चिम पुरी, नई दिल्ली–110063
मो. : 9810249452, 9818390161
Email : hellosamyak1965@gmail.com Web : www.samyakprakashan.in

ISBN : 978-93-6603-674-8
₹ 50

आवरण : संदीप शांत